नीलांचल से वनांचल पहुंचे थे महाप्रभु

सरिता कुमारी

सल्तनत काल में बंगाल की सामाजिक स्थिति में काफी बदलाव आया था। हिन्दू जाति व्यवस्था की वजह से लोग आपस में विभक्त हो चुके थे। शासक वर्ग मुसलमान था जिस वजह से हिन्दुओं की स्वतंत्रता खत्म हो चुकी थी। समाज में महिलाओं के सम्मान में गिरावट आई थी। उन दिनों मुस्लिम समाज संभ्रात जीवन जीते थे। इसी बीच चैतन्य ने बंगाल में वैष्णव भक्ति आंदोलन की शुरुआत कराई। उनका व्यक्तित्व काफी सरल और सहज था। जिस वजह से उनके उपदेश को बड़ी सहजता के साथ लोगों ने स्वीकार किया। भक्ति आंदोलन की शुरुआत चैतन्य ने बड़ी गरिमा पूर्वक की थी। इसका असर ये हुआ कि उनसे प्रभावित लोग कर्मकांड की जटिलता से मुक्त हुए। अंधविश्वास और रूढ़िवादी का जनमानस पर काफी कम प्रभाव पड़ा। चैतन्य का जीवन एक उत्कृष्ट सामाजिक अभियान था, जो पुरी तरह स्वतः स्फूर्त था। चैतन्य का रास्ता आत्मीयता का रास्ता था। इस अभियान का राजनीतिक या सामाजिक स्वार्थ नहीं था। इसमें न ही उग्र धार्मिक चेष्टा थी और न ही संप्रदाय विशेष के लोगों को आकर्षित करने का प्रलोभन था। उनका नाम संकीर्तन ही योगशास्त्र था। चैतन्य के इस अभियान में कई शास्त्रज्ञ, संत और साधक भी शामिल थे जो आंदोलन को धार देने में सहयोग कर रहे थे।